

# पंच गौरव

## जैसलमेर

जिला प्रशासन, जैसलमेर



मुख्यमंत्री  
राजस्थान



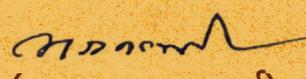
## संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच-गौरव कार्यक्रम की शुरूआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

जिले में पंच-गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए में अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

  
(भजन लाल शर्मा)

## प्रस्तावना

---

राजस्थान राज्य के जिलों में विभिन्न प्रकार की भौगोलिक परिस्थितियाँ हैं। इस कारण यहां अलग—अलग तरह की उपज पैदा होती है एवं विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ पाई जाती हैं। इसी प्रकार राज्य के विभिन्न जिलों में अलग—अलग प्रकार के हस्तशिल्प एवं औद्योगिक उत्पाद प्रमुखता से बनाए जाते हैं। इसके साथ ही राज्य में महत्वपूर्ण खनिजों का खनन एवं प्रसंस्करण कार्य भी कई जिलों में किया जाता है। पर्यटन की दृष्टि से भी राज्य के प्रत्येक जिले में धार्मिक, सांस्कृतिक एवं वन्यजीव, पर्यटन आदि प्रमुख स्थल मौजूद हैं। राज्य में विभिन्न खेल गतिविधियाँ भी जिलों की प्रमुख पहचान रही हैं।

राज्य के सर्वांगीण विकास को दृष्टिगत रखते हुए प्रत्येक जिले की क्षमता एवं क्षेत्र विशेष में विशिष्टता के आधार पर उत्पादों/स्थलों का चयन कर उसके संरक्षण, संवर्धन एवं विकास के माध्यम से जिले को एक मजबूत सांस्कृतिक एवं आर्थिक पहचान दी जा सकती है।

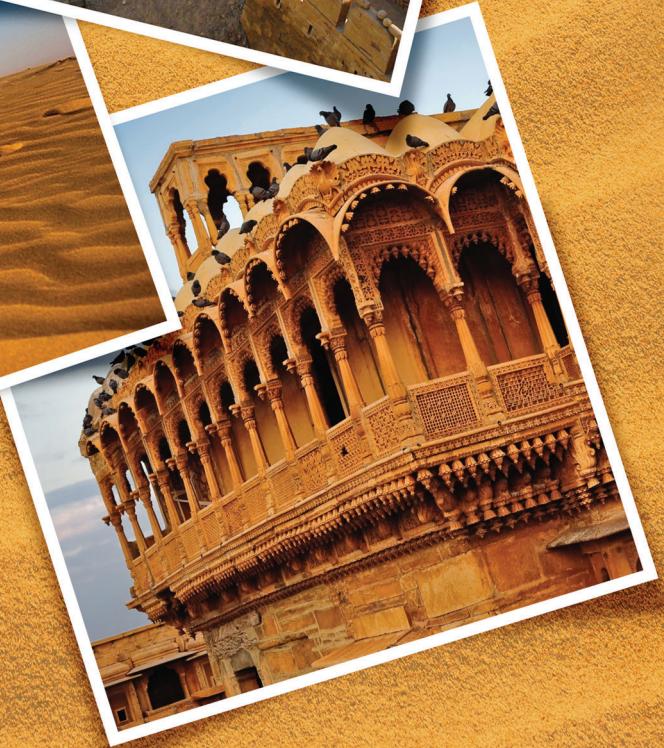
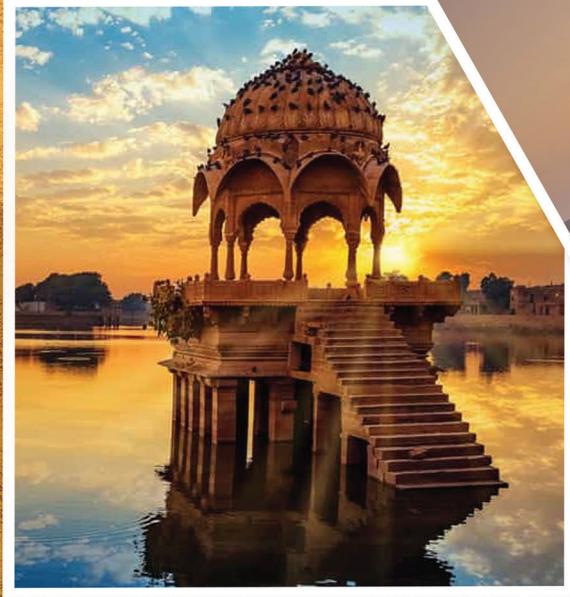
प्रत्येक जिले में विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण के साथ ही इन गतिविधियों के माध्यम से आर्थिक उन्नति एवं रोजगार के अवसरों में बढ़ोत्तरी कर प्रदेश के सभी जिलों के सर्वांगीण विकास हेतु राज्य में “पंच—गौरव” कार्यक्रम शुरू किया गया है।

कार्यक्रम के अन्तर्गत राज्य के प्रत्येक जिले में उसकी विरासत एवं पारिस्थितिकी को ध्यान में रखते हुए “पंच गौरव” के रूप में प्रत्येक जिले में एक जिला—एक उत्पाद, एक जिला—एक उपज, एक जिला—एक वनस्पति प्रजाति, एक जिला—एक खेल एवं एक जिला—एक पर्यटन स्थल चिह्नित किए गए हैं। एवं इसके तहत जिला स्तर पर चयनित पंच गौरव के संवर्धन एवं विकास हेतु एक विस्तृत कार्ययोजना तैयार की जाएगी।

## कार्यक्रम के उद्देश्य

---

- जिले की आर्थिक, पारिस्थितिकी एवं ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण और संवर्धन ।
- स्थानीय शिल्प, उत्पाद, कला को संरक्षण प्रदान करना एवं उत्पादों की गुणवता, विपणन क्षमता में सुधार एवं निर्यात में वृद्धि करना ।
- स्थानीय क्षमताओं का वर्धन कर जिलों में स्थानीय रोजगार को बढ़ाकर जिलों से प्रवास को रोकना ।
- जिलों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा विकसित करना ।
- प्रमुख वनस्पति प्रजातियों का संरक्षण एवं इनके वैज्ञानिक व व्यावसायिक प्रयोगों को बढ़ावा देना ।
- खेलों के विकास के माध्यम से स्वास्थ्य में सुधार, रोजगार तथा पहचान सृजित करना ।
- ऐतिहासिक, धार्मिक एवं पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों का संरक्षण करना एवं इन स्थलों पर वैशिक स्तर की आधारभूत सुविधाएं विकसित करना ।
- सभी जिलों में समान विकास को बढ़ावा देकर क्षेत्रीय विषमताओं/असंतुलन को कम करना ।



# जैसलमेर का इतिहास और महत्व

---

जैसलमेर को “स्वर्णनगरी” या “गोल्डन सिटी” कहा जाता है क्योंकि यहां की इमारतें पीले बलुआ पत्थर से बनी हैं, जो सूरज की रोशनी में सोने की तरह चमकती हैं। राजस्थान के पश्चिमी हिस्से में स्थित यह शहर भारत-पाकिस्तान सीमा के करीब थार मरुस्थल के बीच बसा है।

## इतिहासः

जैसलमेर की स्थापना 1156 ई. में भाटी राजपूत शासक महारावल जैसल सिंह ने की थी। जैसल सिंह ने जब अपने वर्तमान किले के लिए स्थान चुना, तो यह भू-रणनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था, क्योंकि यह रेशम मार्ग (Silk Route) का हिस्सा था, जो भारत, अरब और अफ्रीका के बीच व्यापार का प्रमुख मार्ग था। जैसलमेर का नाम “जैसल” और “मेरु” से लिया गया है, जिसका अर्थ है जैसल का किला।

मध्यकालीन समय में यह शहर व्यापार और वाणिज्य का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा। अरब, फारस और अफ्रीका से आने वाले व्यापारियों का ठहराव स्थल होने के कारण यहां व्यापार खूब फला-फूला। हालांकि, मुगल आक्रमणों और विदेशी आक्रान्ताओं ने जैसलमेर को प्रभावित किया। बाद में ब्रिटिश काल में यह राज्य की सुरक्षा व्यवस्था का हिस्सा बन गया।

## जैसलमेर का सांस्कृतिक महत्वः

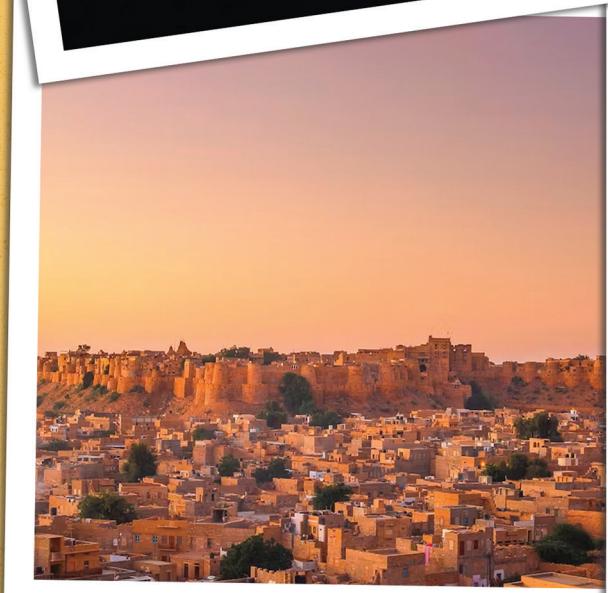
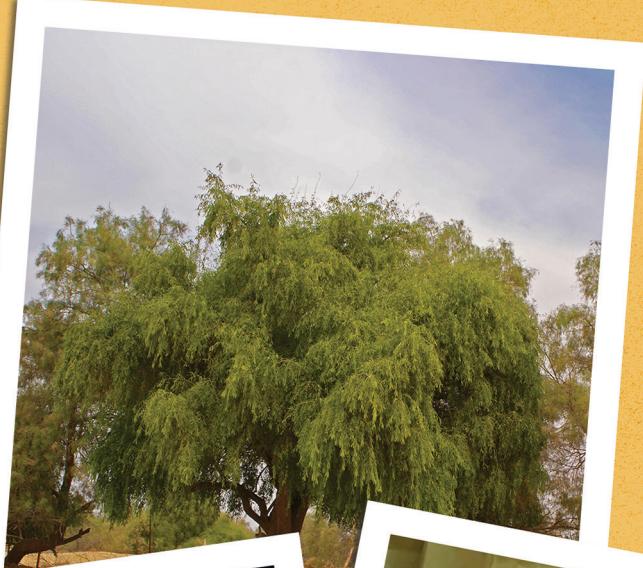
जैसलमेर अपनी अनूठी संस्कृति, लोककथाओं, संगीत और नृत्य के लिए प्रसिद्ध है। यहां का गेर नृत्य और कालबेलिया नृत्य दुनियाभर में प्रसिद्ध है। स्थानीय हस्तशिल्प, कढाईदार कपड़े, चमड़े के सामान और लकड़ी पर की गई नक्काशी की वस्तुएं यहां की संस्कृति को और समृद्ध बनाती हैं। आज जैसलमेर न केवल एक ऐतिहासिक पर्यटन स्थल है बल्कि सामरिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। भारत-पाकिस्तान सीमा के करीब होने के कारण यहां सैन्य दृष्टि से सुरक्षा की दृष्टि से महत्व बढ़ जाता है। जैसलमेर अपने स्वर्णिम इतिहास, समृद्ध संस्कृति और शानदार वास्तुकला के कारण पर्यटकों को आकर्षित करता है और भारतीय संस्कृति में एक विशिष्ट स्थान रखता है।

# जैसलमेर के प्रमुख दर्शनीय पर्यटन स्थल:

---

- 1. जैसलमेर किला (सोनार किला):** यह विशाल किला पीले बलुआ पत्थर से बना है और इसे यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल का दर्जा प्राप्त है। इस किले में आज भी लोग रहते हैं और यह दुनिया के सबसे बड़े जीवित किलों में से एक है।
- 2. पटवों की हवेली:** जैसलमेर की हवेलियां अपनी अद्भुत वास्तुकला और जटिल नक्काशी के लिए प्रसिद्ध हैं। पटवों की हवेली सबसे प्रसिद्ध है, जिसे पांच व्यापारिक परिवारों ने बनवाया था।
- 3. सालिम सिंह की हवेली:** यह हवेली अपनी विशिष्ट मेहराबदार संरचना और अद्वितीय डिजाइन के लिए जानी जाती है।
- 4. नथमल की हवेली:** इस हवेली का निर्माण दो भाइयों द्वारा किया गया था और इसमें जटिल वास्तुकला और सुंदर कलाकृतियां देखने को मिलती हैं।
- 5. गडीसर झील:** यह झील जैसलमेर के पानी का प्रमुख स्रोत थी और अब यह एक पर्यटन स्थल बन गई है। झील के चारों ओर कई मंदिर और घाट हैं।
- 6. खुहड़ी और सम के धोरे:** जैसलमेर आने वाले पर्यटक थार मरुस्थल की रेत पर ऊंट सफारी और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आनंद लेते हैं। यहां सूर्यास्त का दृश्य बहुत ही मनमोहक होता है।
- 7. खाभा किला:** यह एक सुनसान किला है, जो थार मरुस्थल के बीच स्थित है। यह प्राचीन वास्तुकला, रहस्यमय, खगोलदर्शन और ग्रामीण संस्कृति का अद्भुत संगम है जो पर्यटकों हेतु आकर्षण का केंद्र है।
- 8. कुलधरा गांव:** 13वीं शताब्दी का यह परित्यक्त गांव अपनी रहस्यमय कहानियों और खंडहरों के लिए प्रसिद्ध है एवं जैसलमेर का प्रमुख पर्यटन स्थल है।

# जैसलमेर के पंच गौरव



## जैसलमेर के पंच गौरव

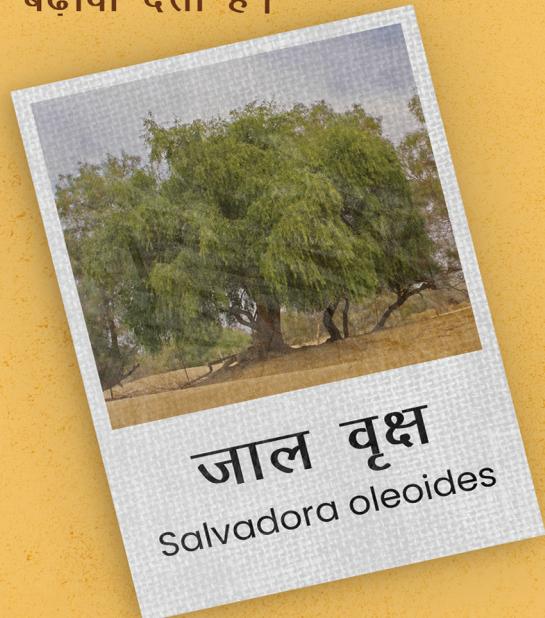
जैसलमेर किला, जिसे सोनार किला या स्वर्ण दुर्ग भी कहा जाता है, राजस्थान के जैसलमेर शहर में स्थित है। इसका निर्माण 1156 ई. में भाटी राजपूत शासक रावल जैसल ने करवाया था। पीले बलुआ पत्थर से निर्मित यह किला सूरज की रोशनी में सुनहरा दिखाई देता है। यह किला व्यापारिक मार्गों पर स्थित था जिससे इसे आर्थिक और सामरिक महत्व प्राप्त हुआ। किले में राजमहल, जैन मंदिर, और सुंदर हवेलियां स्थित हैं। यह किला आज भी जीवित किले के रूप में जाना जाता है जहां लोग निवास करते हैं।

जिम्नास्टिक एक शारीरिक खेल है जिसमें लचीलेपन, संतुलन, शक्ति और समन्वय का प्रदर्शन किया जाता है। इसमें विभिन्न प्रकार की गतिविधियां शामिल होती हैं, जैसे फ्लोर एक्सरसाइज, वॉल्ट, बैलेंस बीम, और समानांतर बार, जिनमें एथलीट्स को कठिन शारीरिक मुद्राओं और कलाबाजियों का प्रदर्शन करना पड़ता है। यह खेल न केवल शारीरिक मजबूती को बढ़ावा देता है बल्कि मानसिक एकाग्रता और अनुशासन भी विकसित करता है। ओलंपिक स्तर पर जिम्नास्टिक की विभिन्न श्रेणियां होती हैं, जिनमें पुरुष और महिला दोनों प्रतियोगी भाग लेते हैं। यह खेल बच्चों और युवाओं में लोकप्रिय है और स्वास्थ्य और फिटनेस को बढ़ावा देता है।



जिम्नास्टिक  
Gymnastics

*Salvadora oleoides* जिसे राजस्थान में “जाल” के नाम से जाना जाता है, एक सदाबहार वृक्ष है जो शुष्क और रेगिस्तानी क्षेत्रों में उगता है। यह 6–9 मीटर तक बढ़ता है और मार्च से जून में फूल और फल देता है, जिन्हें “पीलू” कहा जाता है। इसके विभिन्न भागों का उपयोग औषधीय और घरेलू उद्देश्यों के लिए किया जाता है, जैसे – दातून के रूप में, पीलू के रूप में फल, पशुओं के लिए चारा, इसके बीजों से निकला तेल खाने के लिए एवं डिटर्जेंट उद्योग में उपयोग किया जाता है। पंचगौरव कार्यक्रम में इसे जैव विविधता संरक्षण के तहत शामिल किया गया है।



जाल वृक्ष  
*Salvadora oleoides*

खजूर, जिसका वैज्ञानिक नाम *Phoenix dactylifera* है, एक उष्णकटिबंधीय फलदार वृक्ष है जो शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में उगाया जाता है। खजूर अपने मीठे और पोषक तत्वों से भरपूर फलों के लिए प्रसिद्ध है, जो प्राकृतिक शर्करा, फाइबर, विटामिन और खनिजों जैसे पोटैशियम और मैग्नीशियम से भरपूर होते हैं। यह शरीर को तुरंत ऊर्जा प्रदान करता है। खजूर को ताजा, सूखा या विभिन्न व्यंजनों में उपयोग किया जाता है। इसके अलावा, खजूर का सांस्कृतिक और औषधीय महत्व भी है। यह गर्म जलवायु में पनपता है और रेगिस्तानी क्षेत्रों की कृषि के लिए उपयुक्त है।



**खजूर**  
*Phoenix dactylifera*



**पीला पत्थर**  
Yellow Stone

(Yellow Stone) जैसलमेर का पीला पत्थर, जिसे सोनार पत्थर भी कहा जाता है, राजस्थान के जैसलमेर ज़िले का ODOP (वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट) है। यह पत्थर अपनी अनोखी सुनहरी आभा, मजबूती और मौसम-प्रतिरोधक गुणों के लिए प्रसिद्ध है। जैसलमेर का सोनार किला, पटवों की हवेली और सालिम सिंह की हवेली जैसे ऐतिहासिक स्मारक इस पत्थर से बने हैं। इसका उपयोग वास्तुकला, सजावट और आधुनिक भवन निर्माण में भी किया जाता है। यह पत्थर प्राचीन किलों से लेकर आधुनिक संरचनाओं तक मजबूती और सौंदर्य का अद्भुत संयोजन प्रस्तुत करता है, जिससे स्थानीय उद्योग को भी बढ़ावा मिलता है।

# एक जिला – एक उत्पाद – पीला पत्थर

---

जैसलमेर का पीला पत्थर, जिसे गोल्डन स्टोन भी कहा जाता है, जैसलमेर की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक है। सरकार ने “एक जिला एक उत्पाद” (ODOP) योजना के तहत इसे जैसलमेर का प्रमुख उत्पाद घोषित किया है। इसके अलावा, इसे पंचगौरव कार्यक्रम में भी शामिल किया गया है, जो जैसलमेर की विशिष्ट धरोहर और सांस्कृतिक वैभव को दर्शाता है।

## मुख्य विशेषताएः:

- सुनहरी चमकः: यह पत्थर सूर्य की रोशनी में सोने जैसा चमकता है, जिससे जैसलमेर को “गोल्डन सिटी” का दर्जा मिला।
- मजबूती और स्थायित्वः: इसकी मजबूती और दीर्घकालिक टिकाऊपन इसे भवन निर्माण के लिए उपयुक्त बनाता है।
- पर्यावरण अनुकूलः: यह पत्थर प्राकृतिक रूप से ठंडक बनाए रखता है, जिससे इसे गर्म जलवायु में उपयोगी माना जाता है।
- स्थानीय रोजगारः: इस उद्योग से जुड़े हजारों कारीगरों को रोजगार मिलता है, जिससे जैसलमेर की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलती है।

## प्रमुख उपयोगः

- वास्तुकला और ऐतिहासिक इमारतेः: जैसलमेर किला, पटवों की हवेली, नथमल की हवेली और सालिम सिंह की हवेली में इस पत्थर का व्यापक उपयोग हुआ है, जो आज भी अपनी भव्यता से दर्शकों को आकर्षित करते हैं।
- आधुनिक निर्माण कार्यः: वर्तमान में यह पत्थर होटल, रिसॉर्ट्स और सरकारी भवनों में सजावट और निर्माण के लिए उपयोग किया जाता है।
- सजावटी और हस्तशिल्प उत्पादः: पीले पत्थर से बनी मूर्तियां, सजावटी वस्तुएं और फर्नीचर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय हैं।

# एक जिला – एक पर्यटन स्थल – जैसलमेर किला

---

जैसलमेर किला, जिसे “सोनार किला” या “गोल्डन फोर्ट” के नाम से जाना जाता है, राजस्थान के जैसलमेर जिले में स्थित है। 1156 ई. में राव जैसल द्वारा निर्मित यह किला त्रिकूट पहाड़ी पर स्थित है और पीले बलुआ पत्थर से बना हुआ है, जो सूर्य की रोशनी में सुनहरी आभा बिखेरता है। यह किला अपनी अद्भुत स्थापत्य कला, ऐतिहासिक महत्व और पुरातात्त्विक वैभव के लिए प्रसिद्ध है

## राजपूत वीरता का प्रतीक:

यह किला कई आक्रमणों और युद्धों का साक्षी रहा है। अलाउद्दीन खिलजी और मुगल शासकों के आक्रमण के बावजूद यह किला राजपूत वीरता का प्रमाण बना रहा।

व्यापारिक केंद्र: मध्यकाल में यह किला सिल्क रुट का प्रमुख केंद्र था, जिससे व्यापारिक समृद्धि में वृद्धि हुई। इस किले में राजपूतों की गौरवशाली संस्कृति और जीवनशैली की झलक मिलती है।

## पुरातात्त्विक और स्थापत्य भव्यता:

प्राकृतिक सौंदर्य: यह किला ऊँची त्रिकूट पहाड़ी पर स्थित है और चारों ओर से मजबूत दीवारों से घिरा हुआ है। किले में प्रवेश के लिए अखाई पोल, सूरज पोल, गणेश पोल और हवा पोल जैसे विशाल द्वार हैं जो इसकी भव्यता को दर्शाते हैं।

जैसलमेर किला न केवल स्थापत्य कला का उत्कृष्ट नमूना है बल्कि यह भारत की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर का अभिन्न हिस्सा भी है। इसकी भव्यता और गौरव आज भी देश-विदेश से पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

## साहित्य और सिनेमा में स्थान:

सत्यजीत रे की प्रसिद्ध फिल्म “सोनार किला” (1974) ने इस किले को वैश्विक पहचान दिलाई।

जैसलमेर किला न केवल स्थापत्य कला का उत्कृष्ट नमूना है बल्कि यह भारत की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर का अभिन्न हिस्सा भी है। इसकी भव्यता और गौरव आज भी देश-विदेश से पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

# एक जिला— एक उपज –खजूर

---

वर्ष 2009–10 में जैसलमेर जिलें में खजूर क्षेत्र विस्तार की दृष्टि से राजकीय फार्म, सगरा भोजका पर विभिन्न प्रजातियों के टिश्यूकल्वर खजूर पौधों यथा बरही, खुनैजी, जामली, खदरावी, मेडजूल, सगई, खलास आदि का लगभग 98 है० क्षेत्र में 15000 पौधे स्थापित कर खजूर प्रदर्शन फार्म स्थापित किया गया। प्रदर्शन फार्म को देखकर किसानों ने खजूर की खेती अपनाई है। वर्तमान में जैसलमेर जिलें में लगभग 140 है क्षेत्र में खजूर की खेती की जा रही है, तथा उच्च गुणवत्ता कि किस्में यथा मेडजूल खदरावी व जामली का विकास हुआ है। जो पिण्ड स्टेज की किस्में है।

जैसलमेर जिले की जलवायु पिण्ड स्टेज के खजूर के लिये काफी उपयुक्त है। पिण्ड वाली किस्मों के लिये आवश्यक है कि जुलाई–अगस्त में वर्षा न हो। लेकिन पिछले दो वर्षों में *Climate Change* के कारण यहाँ माह जुलाई–अगस्त में अधिक वर्षा होने के कारण किसानों का रुझान पिण्ड स्टेज की किस्म से ताजा उपयोग की किस्मों (डोका स्टेज) यथा बरही व खुनैजी की ओर बढ़ा है।

जिलें की जलवायु के दृष्टिगत उच्च गुणवत्ता की पिण्ड स्टेज की किस्मों यथा मेडजूल, खदरावी, जामली आदि को बढ़ावा दिए जाने की आवश्यकता है।

वर्तमान में उद्यानिकी विभाग की योजना “राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के कम्पोनेन्ट “Area Expansion of Date palm in western Rajasthan” के तहत क्षेत्र विस्तार किया जा रहा है। इस योजना अन्तर्गत टिश्यूकल्वर खजूर पौधे पर राशि ₹० 3000/- या पौधे की लागत का 75 प्रतिशत जो की कम हो अनुदान दिया जा रहा है।

पिण्ड वाली किस्मों का खजूर टिश्यूकल्वर का प्रति पौधा लगभग राशि ₹० 4500 का आता है। जिस पर उपरोक्तानुसार अनुदान दिये जाने पर लगभग ₹० 1500 प्रति पौधा कृषक हिस्सा राशि आती है।

# एक जिला— एक वनस्पति प्रजाति—जाल वृक्ष

---

*Salvadora Oleoides* वृक्ष जिसे आम तौर पर राजस्थान में “जाल” के नाम से जाना जाता है, एक सदाबहार वृक्ष है और इसमें कई झुकी हुई शाखाओं के साथ मुड़ा हुआ तना होता है। अनुकूल बढ़ती परिस्थितियों में यह 6 – 9 मीटर की ऊँचाई तक बढ़ सकता है। जाल का पेड़ शुष्क भूमि क्षेत्रों एवं रेगिस्तानी इलाकों की मध्यम खारी मिट्टी में उगता है। मार्च से जून के महीनों के बीच फूल एवं फल लगते हैं। फूल हरे—सफेद रंग के होते हैं और फल जिन्हें “पीलू” भी कहा जाता है, चिनके बेरी प्रकार के होते हैं जो पकने पर पीले से लाल हो जाते हैं और इन में एक बीज होता है।

## उपयोग:

पौधे के विभिन्न भागों का उपयोग विभिन्न उद्देश्यों के लिये किया जा सकता है, जैसे पेट में ठंडक पहुंचाने के लिये, मीठे कच्चे फल, शाखाओं और जड़ों का उपयोग दातों की देखभाल के लिये टूथब्रश के रूप में किया जाता है। पत्ते चारे का बेहतरीन श्रोत है। ग्रामीण क्षेत्रों में तने एवं शाखाओं का प्रयोग खाना पकाने के लिये किया जाता है। बीजों में गैर खाद्य तेल पाया जाता है। जाल से निकाले गये तेल का उपयोग साबुन और डिटर्जेंट उत्पादन उद्योगों में नारियल के विकल्प के रूप में किया जाता है।

## महत्व:

सदाबहार धना और शाखाओं वाला पेड़ प्रतिकूल पर्यावरणीय परिस्थितियों के खिलाफ पालतू जानवरों और वन्य जीवों के लिये एक आदर्श आवास है। गर्मियों में जाल छतर के नीचे का तापमान अक्सर आस पास के वातावरण की तुलना में 8 डिग्री सेल्सियस तक कम होता है। यह विभिन्न प्रकार के पक्षियों के लिये आवास प्रदान करता है।

जाल वृक्ष पुनर्वनीकरण, बंजर भूमि के क्षरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है तथा वन्यजीवों के लिये आश्रय, पशुओं के चारा, छप्पर के लिये शाखायें, खाने के लिये फल तथा स्थानीय क्षेत्रों के निवासियों के लिये मनोरंजन प्रदान करता है।

## एक जिला – एक खेल – जिम्नास्टिक

---

जैसलमेर जिले में जिम्नास्टिक खेल प्रचलित खेल है। पूर्व में जिला खेलकूद प्रशिक्षण केन्द्र जैसलमेर में राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद जयपुर द्वारा नियमित जिम्नास्टिक खेल का प्रशिक्षक प्रतिनियुक्त था एवं जैसलमेर के खिलाड़ियों ने राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर पदक प्राप्त किये हैं। वर्तमान में भी जैसलमेर जिले के खिलाड़ी विद्यालयी एवं ओपन राज्य स्तर व राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ण खेल का प्रदर्शन कर रहे हैं।

जैसलमेर जिले में जिम्नास्टिक खेल के उत्थान के लिये खेल अकादमी स्थापित की जानी है एवं जिम्नास्टिक खेल के सभी खेल उपकरण की आवश्यकता रहेगी, जिला खेलकूद प्रशिक्षण केन्द्र जैसलमेर में नवीन मल्टीपरपज इण्डोर हॉल का निर्माण कार्य प्रक्रियाधीन है।

वर्तमान में राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद जयपुर द्वारा जैसलमेर जिले में बास्केटबॉल एवं हैण्डबॉल खेल की अकादमी संचालित की जा रही है। दोनों अकादमीयों के खिलाड़ी राज्य, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्पर पदक प्राप्त कर जिले का नाम गौरवान्वित कर रहे हैं।

पंचगौरव कार्यक्रम के तहत जिम्नास्टिक खेल का व्यापक प्रचार प्रसार होगा। जिससे इस खेल में जैसलमेर, जिला, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी तैयार कर जिले का नाम गौरवान्वित करेगा।



सत्यमेव जयते

जिला प्रशासन, जैसलमेर